Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)

Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017
ISSN : 0976-0237

ब्राह्मण वर्ग और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उनका योगदान

Ms. Shabnam Bharti

प्राचीन भारतीय समाज के व्यक्तियों को जिन चार भागों में बांटा गया वे चार वर्ण कहलाए। इस प्रकार भारतीय समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था थी। किन्तु आज के समाज में प्राचीनकाल की वर्णव्यवस्था नहीं दिखाई पड़ती। वर्णव्यवस्था की विशेषता यह थी कि इसे ईश्वरप्रदत माना गया। हमारा संस्कृत साहित्य मानता है कि वर्णव्यवस्था ईश्वर द्वारा स्थापित की गई है। ऋग्वेद का अधोलिखित मन्त्र इस मान्यता का प्रारम्भिक सुत्र है–

''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत।
ऊरु तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यां शुद्रो अजायत।''

परमपुरुष परमात्मा के मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुए (भुजाओं से क्षत्रियों की उत्पत्ति हुई, जंघाओ से वैश्य उत्पन्न हुए, तथा पैरों से शुद्रों की उत्पत्ति हुई।

ब्राह्मण वर्ग

ब्राह्मण वर्ग की उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से मानी गई है। जिस प्रकार मनुष्य का मस्तिष्क उसकी क्रियाओं का संचालन करता है और उसमें अच्छे विचारों का समावेश करके उसे अच्छे मार्ग की ओर प्रवृत करता है, उसी प्रकार समाज का संचालन करते हुए उसे अच्छे मार्ग की ओर ले जाने वाले ब्राह्मण है, जो अपने विचारों, दीर्घकालीन अनुभव एवं ज्ञान से समाज का नेतृत्व करते थे। मनु ने ज्ञानवान होने के कारण ही ब्राह्मणों को सर्वश्रेष्ठ माना।1

ब्राह्मण की तपस्या तेजस्विता तथा मान्यता के कारण ही मनु की दृष्टि में दस वर्ष का भी ब्रह्मण सौ वर्ष के क्षत्रिय द्वारा पूजनीय है। यदि ब्राह्मण से कोई अपराध हो गया हो तो भी उसको मृत्युदण्ड नहीं देना चाहिए क्योंकि ब्राह्मण सभी प्राणियों का गुरु है। उससे यदि कोई त्रुटि भी हो जाए तो भी उसके ब्राह्मत्व, तेज और गुरुत्व को कम नहीं समझना चाहिए ?2

महाभारत, आदिपर्व 28/3-5

वैदिक काल से ही ब्राह्मण वर्ण वर्णव्यवस्था में सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ण माना जाता रहा है। सभी हिन्दू ग्रन्थों में ब्राह्मण को ईश्वर के समान पूज्य माना गया है।

आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से ब्राह्मणों को समाज का मार्गदर्शक माना गया। सामाजिक कानून उनके द्वारा बनाये गये। वेदों में ब्राह्मणों को सर्वोच्चता प्रदान की गई है। ऋग्वेद में वर्णित है कि जो राजा ब्राह्मणों का सम्मान करता है वहीं अपने घर में शान्ति से रह सकता है।3

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समाज को नैतिक और अध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाने वाले ब्राह्मण वर्ग का उत्तरदायित्त्व इतना अधिक था कि इस वर्ण के व्यक्तियों को अपने लिए निर्धारित कर्तव्यों का

Assistant Professor,P.G. Department of History, Guru Nanak Girls College, Yamuna Nagar

Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017
ISSN : 0976-0237

पालन बड़ी सावधानी से करना पड़ता था। अन्यथा उनका ब्राह्मणत्व ख़तरे में पड़ जाता था। प्राचीनकाल में कौटिल्य (चाणक्य) एक प्रसिद्ध पुरोहित थे। चाणक्य का जन्म एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनका एक नाम संभवतः विष्णुगुप्त भी था। चाणक्य ने उस समय के महान शिक्षा केन्द्र तक्षशिला में शिक्षा पाई थी। 14 वर्ष के अध्ययन के बाद 26 वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी समाजशास्त्र की शिक्षा पूर्ण की और नालंदा में उन्होंने शिक्षण कार्य भी किया। उन्हें 'भारत का मैकियावली' के नाम से भी जाना जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि एक बार मगध के दरबार में किसी कारण से उनका अपमान किया गया था, तभी उन्होंने नंद-वंश के विनाश का बीड़ा उठाया था। उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को राजगद्दी पर बैठा कर वास्तव में अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली तथा नंद वंश को मिटाकर मौर्य वंश की स्थापना की।

आचार्य चाणक्य भारतीय इतिहास के सर्वाधिक प्रखर कुटनीतिज्ञ माने जाते हैं। उन्होंने 'आर्थशास्त्र' नामक पुस्तक में अपने राजनैतिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। महान मौर्य वंश की स्थापना का श्रेय चाणक्य को ही जाता है। चाणक्य एक विद्वान, दूरदर्शी तथा दृढ़संकल्पी व्यक्ति थे और अर्थशास्त्र, राजनीति और कुटनीति के आचार्य थे।

आज ब्राह्मणों का वैसा सम्मान नहीं है, जैसा प्राचीनकाल में था। इसका कारण ऐसे ब्राह्मण वर्ग को माना गया जो अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते थे। बदलता हुआ परिवेश भी इनके पतन का कारण था।भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं ब्राह्मण वर्ग।

आधुनिक भारत में अँग्रेजों के शासनकाल में इसी वर्ग (ब्राह्मण वर्ग) के महान व्यक्तियों ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके कारण भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन ने एक नई दिशा पकड़ीं। मंगल पाण्डे, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, गोपालकृष्ण गोखले, बालगंगाधर तिलक आदि ब्राह्मण वर्ग से सम्बंधित ऐसे व्यक्ति हुए जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना योगदान दिया। इन राष्ट्रीय नेताओं के योगदान का वर्णन इस प्रकार है-

मंगल पाण्डे

मंगल पाण्डे एक भारतीय सैनिक था। जिसने 1857 ई0 के विद्रोह में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। मंगल पाण्डे का जन्म 1827 ई0 को ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने 1849 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेना में नौकरी प्राप्त की। 1857 ई0 के स्वतन्त्रता संग्राम को जन-जन का मुक्ति संग्राम बनाने के लिए राष्ट्रीय नेताओं ने बड़े पैमाने पर तैयारी की थी। उन्होंने 31 मई 1857 ई0 की तिथि क्रान्ति के लिए निश्चित की थी। परन्तु उससे पहले ही 29 मार्च 1857 ई0 को बैरकपुर छावनी में 39वीं देशी पलटन के सिपाही मंगल पाण्डे ने विद्रोह का बिगुल बजा दिया।

मंगल पाण्डे जब बंगाल में थे तो तभी उन्हें उनके साथी ने सूचना दी कि कारतूसों में चर्बी का प्रयोग किया जा रहा है। इन कारतूसों को प्रयोग करने से पहले मुँह द्वारा छीला जाता था। इस तरह यह अँग्रेजों द्वारा भारतीयों के धर्म को भ्रष्ट करने की चाल थी।

जब मंगल पाण्डे को इन चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने को कहा गया तो उन्होंने इंकार कर

Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017
ISSN : 0976-0237

दिया। जब उनसे जबरदस्ती ऐसा करने को विवश किया गया तो उन्होंने मेजर ह्युगसन को गोली से उड़ा दिया। दूसरे अँग्रेज अधिकारी लैफ़्टिनेंट बाद्य ने जब उन्हें पकड़ने की कोशिश की तो उन्हें भी गोली मार दी। मंगल पाण्डे ब्रिटिश सेना के वह पहले सिपाही थे जिन्होनें किसी अँग्रेज अधिकारी पर गोली चलाने का साहस किया था। अँग्रेजों द्वारा उन्हें पकड़ लिया गया। उन पर मुकद्दमा चलाया गया और 8 अप्रैल 1857 ई0 को उन्हें फाँसी दे दी गई। इस प्रकार इस देशभक्त ने भारत में राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा दिया। यद्यपि यह विद्रोह असफल रहा, परन्तु इसमें मंगल पण्डे के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता।

सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी

सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी जिन्हें बंगाल के ''बेताज बादशाह''की उपाधि प्राप्त है भारत के प्रमुख नरमपंथी नेता थे। वह अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक भारत के राष्ट्रीय अंन्दोलन से जुड़े रहे।

उनका जन्म कलकत्ता के एक ब्राह्मण परिवार में 1848 ई0 में हुआ। अपने छात्र जीवन में उन्होंने अनेक पुरस्कार जीते। आई.सी.एस. के परीक्षा के लिए वे इंग्लैण्ड गए। इस परीक्षा में सफल होने वाले वे पहले भारतीय थे। उन्हें सिलहट में असिस्टैण्ट मैजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त किया गया, परन्तु एक साल भी नहीं हुआ था और तकनीकी गलती के कारण उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया।

सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी का भारतीय सिविल सेवा से निकाला जाना उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। 'उनको पदमुक्त किए जाने वाला दिन बेशक उनके लिए मुसीबतें लाया पर यह भारत और बंगाल के लिए एक सुनहरी दिन था। आधुनिक भारत के सामाजिक दृश्य के पटल पर एक मुख्य निर्माता के तौर पर उनका रास्ता साफ हो गया'।4

सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने कुछ समय शिक्षक के रूप में कार्य किया। वे एक पत्रकार भी थे। उन्होंने 'द बंगाली' नामक समाचार पत्र का कलकत्ता से सम्पादन किया। वे बिना किसी डर के अपने समाचार पत्र में सरकारी अधिकारियों की आलोचना करते थे। कर्जन की नीतियों की उन्होंने खुलकर आलोचना की। ऐंग्लो इण्डियन समुदाय की आलोचना के कारण उन्हें दो महीने जेल में रहना पड़ा। उन्होंने 1876 ई0 को कलकत्ता में इण्डियन एसोसिएशन की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी संस्था के माध्यम से उन्होनें कई वर्षो तक भारत के लोगों की सेवा की।

जब सरकार ने आई.सी.एस. की परीक्षा के लिए आयु 21 साल से घटाकर 19 साल कर दी तब सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने इसके विरूद्ध जनता को जागृत करने के लिए भारत का दौरा किया। डॉ. आर.सी. मजुमदार ने कहा है कि सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी के दौरों ने भारत के राजनीतिक पुनर्जागरण के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा। पहली बार भारत का राजनीतिक इकाई के रूप में विचार उत्पन्न हुआ।5

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अधिवेशनों में दो बार वे इसके अध्यक्ष चुने गए 1895 ई0 में पूना, 1902 ई. में अहमदाबाद बंगाल विभाजन के बाद स्वदेशी आन्दोलन को उन्होंने शिखर तक पहुँचा दिया। इस तरह उन्होंने लम्बे समय तक भारत की तत्परता से सेवा की। उनके बारे में कहा गया है कि ''बहुत कम लोग ही उनकी नायकता, चारित्रिक श्रेष्ठता, बलिदान भावना, देशभक्ति के जुनून, परोपकारी भावना तथा संगठन क्षमता को लांघ सके।''6 रेत पर पर उन्होंने कभी न मिटने वाले निशान छोड़े हैं।7

Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017
ISSN : 0976-0237

गोपाल कृष्ण गोखले

गोपाल कृष्ण गोखले एक महान देशभक्त थे। उनसे प्रभावित होकर महात्मा गाँधी जी ने उन्हें अपना राजनीतिक गुरु माना। उनका जन्म 1866 ई. को कोल्हापुर में गरीब चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ। उन्होंने स्नातक एल्फिंस्टन कॉलेज बम्बई से की। उन्होंने काफी समय तक अध्यापन का कार्य किया। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत 'पुना सार्वजनिक सभा' के सेक्रेटरी के तौर पर 1886 ई. में की थी। 1905 ई. में काँग्रेस के बनारस अधिवेशन में वे अध्यक्ष चुने गए। उनका इस अधिवेशन में दिया गया भाषण सर्वश्रेष्ठ अध्यक्षीय भाषण माना गया। इसमें उन्होंने लॉर्ड कर्जन पर टिप्पणी करते हुए कहा कि 'सज्जनों, यह कितना सच है कि हर चीज का अंत होता है। इसी प्रकार लॉर्ड कर्जन के वायसरायशिप का भी अंत हो गया। इस प्रकार के प्रशासनिक काल को देखने के लिए हमें अपने देश के औरंगजेब के काल में जाना होगा'।8

उनका मानना था कि यदि ब्रिटिश जनता को भारतीयों की वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा तो ब्रिटिश सरकार प्रशासन में सुधार अवश्य करेगी। 1905 ई0 में उनके द्वारा स्थापित 'सरवेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसाइटी' उनका भारत को सर्वश्रेष्ठ उपहार था। इसका मुख्य उद्देश्य भारत की स्वराज्य प्राप्ति के लिए संघर्ष करना, मातृभूमि की सेवा के लिए नवयुवकों को तैयार करना, सामाजिक सेवा करना आदि था। उन्होंने 'राष्ट्रीय सभा समाचार' नामक समाचार पत्र का आरंभ किया। उनके लेखों से भारतीयों में नये उत्साह का संचार हुआ। वे एक महान देशभक्त थे जिन्होंने भारतीयों में आत्मविश्वास भर दिया। उनके बारे में सी.वाई. चिन्तामणि ने कहा- 'मैं यह साहस के साथ कहता हूँ कि गोखले के बाद कोई गोखले नहीं हुआ'।9

1915 ई0 में जब उनकी मृत्यु हुई थी तो बाल गंगाधर तिलक ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा 'भारत का हीरा महाराष्ट्र का रत्न, कर्मठता का राजा, चिता भूमि पर चिर निद्रा में लीन है। उसकी तरफ देखो और उनका अनुसरण करो।'10

बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक भी एक देशभक्त, एक महान शिक्षाविद्, महान पत्रकार और माने हुए विद्वान थे। उनका जन्म 1856 ई. में रत्नगिरी जोकि महाराष्ट्र के कोकंण जिले में स्थित है, में हुआ। वह चितपावन ब्राह्मण परिवार से संबंधित थे।

बाल गंगाधर तिलक जी चाहते थे कि भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार केवल भारतीयों द्वारा ही होना चाहिए न कि विदेशियों द्वारा। इसके लिए उन्होंने पूना में न्य इंग्लिश स्कूल खोला और 1884 ई0 में 'दक्कन ऐजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। उन्होंने अपने दो समाचार-पत्रों 'केसरी' और 'मराठा' के माध्यम से जनता में नवीन जागृति उत्पन्न की। उनकी मान्यता थी कि जब तक भारतीय लोगों में अपने इतिहास संस्कृति तथा धर्म के लिए पुनः सम्मान की भावना जागृत नहीं होती तब तक सभी प्रकार के राजनीतिक और सामाजिक सुधारों के प्रयास निष्फल साबित होंगें। इसके लिए उन्होंने शिवाजी तथा गणपति उत्सवों को नवीन रूपों में मनाना आरंभ किया।

बाल गंगाधर तिलक 1889 ई. में राष्ट्रीय काँग्रेस में शामिल हुए। उन्होंने नरपंथियों की विचारधारा

Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017
ISSN : 0976-0237

का कड़ा विरोध किया। उन्होंने कहा 'राजनीतिक अधिकारों के लिए लड़ा जाता है। नरमपंथी समझते हैं कि उन्हें मिन्नतें करने से प्राप्त किया जा सकता है। हम समझते हैं कि उन्हें जोरदार दबाव डालकर ही प्राप्त किया जा सकता है'।11

1905 ई0 में बंगाल विभाजन के समय उन्होंने अपने समाचार पत्र केसरी तथा मराठा द्वारा स्वराज, स्वदेशी, बॉयकाट तथा राष्ट्रीय शिक्षा का संदेश जन–जन तक पहुँचाया। बाल गंगाधर तिलक ने घोषणा कि 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहुँगा'।12 अपने समाचार पत्र के माध्यम से उकसाने के जुर्म में उन्हें दो बार जेल भी जाना पड़ा।

उनका मानना था कि अगर भारतीयों को आजादी प्राप्त करनी है तो उन्हें अपने बलबूते पर प्राप्त करनी होगी। विदेशी शासक को मार भगाने के लिए जोरदार दबाव डालना होगा। निस्संदेह देश तिलक का सदा ऋणी रहेगा। उनके अंनत संघर्ष के लिए जो उन्होंने अपने देशवासियों को राजनीतिक बंधनों से आजाद कराने के लिए चलाया तथा उन कष्टों और बलिदानों के लिए जो उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए सहे। निस्संदेह उन्होंने ही इतिहास मोड़ा।13

चन्द्रशेखर आजाद

चन्द्रशेखर आजाद भारत के महान क्रान्तिकारी थे। उन्का जन्म 23 जुलाई 1906 ई0 में भाबरा गांव, मध्यप्रदेश में हुआ था। उनका वास्तविक नाम चन्द्रशेखर तिवारी था। उनकी माता जगरानी देवी उनके पिता सीताराम तिवारी की तीसरी पत्नी थी। उदनकी माता उन्हें एक संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थी। इसलिए उन्हें काशीविद्यापीठ, बनारस में पढ़ने के लिए भेजा गया। जब गांधी जी ने असहयोग अंदोलन चलाया तो चन्द्रशेखर केवल पंद्रह साल के थे। उन्होने इसमें भाग लिया और उन्हें गिरफतार कर लिया गया। मैजिस्ट्रेट ने उनसे पुछा– उनका नाम क्या है – उन्होने बताया आजाद। उनके पिता का नाम क्या है – स्वतंत्रता।उनका निवास कहां है – जेल। और उस दिन के बाद वो आजाद के नाम से जाने गए। हिन्दूस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशिएसन में उन्होने सक्रिय भुमिका निभाई। 1928 ई0 में लालालाजपत राय को लाठियों से घायल करने वाले सांडर्स की हत्या करने वाले क्रान्तिकारी दल में चन्द्रशेखर भी शामिल थे। एल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में पुलिस से घिर जाने के बावजुद उन्होने अपनी हिम्मत नहीं छोड़ी। वे जीवित अंग्रेजों के हाथ नहीं आना चाहते थे। इसलिए खुद को गोली मार ली। उनके खौफ की वजह से पुलिसवाले उनके मृत शरीर के पास जाने से भी घबरा रहे थे। ऐसे वीर क्रांन्तिकारी का नाम भारत में सदैव अमर रहेगा।

विनायक दामोदर सावरकर

विनायक दामोदर सावरकर एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ और साथ ही एक कवि और लेखक भी थे। उनका जन्म 1883 ई0 महाराष्ट्र के भगुर ग्राम में एक मराठी चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्हें वीर सावरकर नाम से संबोधित किया जाता है। उन्होने 'अभिनव भारत' नामक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। 1905 ई0 में बंगाल विभाजन के समय उन्होने पुणे में विदेशी बहिष्कार तथा स्वदेशी पर बल दिया। उन्होने 1857 ई0 के विद्रोह के ऊपर 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' नामक पुस्तक लिखी। बाद में सरकार ने इसके ऊपर प्रतिबंध लगा दिये। अपने क्रांन्तिकारी कार्यो तथा लेखो के वजह से इन्हें दो बार

Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017
ISSN : 0976-0237

आजीवन कारावास का दण्ड मिला। इस पर सावरकर ने कहा–

‘मातृभुमि ! तेरे चरणों में पहले ही मै अपना मन,
अर्पित कर चुका हूँ। देश सेवा ही ईश्वर सेवा है,
यह मानकर तेरी सेवा के माध्यम से भगवान की सेवा की’।14

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को नई दिशा देने में ब्राह्मण वर्ग के इन नेताओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।यहां तक कि कई बार इन नेताओं को जेल तक जाना पड़ा। अपनी नीतियों तथा विचारों के माध्यम से इन्होंने जनसाधारण में नई जागृति पैदा की। उन्हें स्वतंत्रता के मार्ग पर अग्रसर किया। सरकार की गलत नीतियों का विरोध किया। बाल गंगाधर तिलक ने कहा– ‘स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहुँगा। उसी तरह चन्द्रशेखर आजाद, वीर सावरकर ने अपनी नीतियों से ब्रिटिश सरकार को सबक सिखाया। चन्द्रशेखर आजाद ने जहां अपनी क्रांन्तिकारी गतिविधियों से तथा वहीं वीर सावरकर ने अपने लेखों से सरकार की नाक में दम किया। ये दोनो ही क्रान्तिकारी महान देशभक्त हुए। इस तरह ब्राह्मण वर्ग के इन नेताओं, क्रान्तिकारियों के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में दिए गए योगदान को नहीं भुलाया जा सकता। इनका नाम भारतीय स्वतंत्रता इतिहास में सदैव अमर रहेगा।

सन्दर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. डॉ0 किरण टण्डन ‘भारतीय संस्कृति’, पृष्ठ–298।
2. वही : पृष्ठ – 302–303।
3. सुंदरलाल सागर, ‘हिन्दू कल्चर एण्ड कास्ट सिस्टम इन इण्डिया’, पृ0– 106–107।
4. डॉ0 बी. बैनर्जी, ‘हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इण्डिया’, (नई दिल्ली : 1979) पृष्ठ– 180।
5. डॉ0 आर.सी. मजुमदार, ‘डिस्नरी ऑफ नेशनल बायोग्राफिस (कलकत्ता : 1973) भाग–1 पृष्ठ–126।
6. एस.के.बॉस, ‘सूरेन्द्रनाथ बैनर्जी’ (नई दिल्ली:1974) पृष्ठ–107।
7. डॉ0 बी.बैनर्जी, op.cit, पृष्ठ–188।
8. गोपाल कृष्ण गोखले, साइटड इन गोपाल कृष्ण गोखले बाए टी.आर. डियोगिरकर (नई दिल्ली: 1965) पृष्ठ–39।
9. सी.वाई. चिन्तामणि, ‘इण्डियन पॉलिटिक्स सिन्स द म्युटिनी’’ (इलाहाबाद : 1947) पृष्ठ–67।
10. बाल गंगाधर तिलक, op.cit, पृष्ठ–139।
11. वही : पृष्ठ–51।
12. वही: पृष्ठ–57।
13. धनंजयकीर, ‘लोकमान्य तिलक : फादर ऑफ अवर फ्रीडम स्ट्रगल (बाम्बे:1959) पृष्ठ–437।
14. शर्मा, सुरेन्द्र ‘आज भी प्रांसगिक है सावरकर के विचार’।